भगत नामदेव - सबद २१
हले यारां हले यारां खुसिखबरी ॥
रागु तिलंग, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ७२७

हले यारां हले यारां खुसिखबरी ॥
बलि बलि जांउ हउ बलि बलि जांउ ॥
नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउ ॥१॥ रहाउ ॥
कुजा आमद कुजा रफती कुजा मे रवी ॥
द्वारिका नगरी रासि बुगोई ॥१॥
खूबु तेरी पगरी मीठे तेरे बोल ॥
द्वारिका नगरी काहे के मगोल ॥२॥
चंदीं हजार आलम एकल खानां ॥
हम चिनी पातिसाह सांवले बरनां ॥३॥
असपति गजपति नरह नरिंद ॥
नामे के स्वामी मीर मुकंद ॥४॥२॥३॥

सार: आंतरिक संगति वह दुर्लभ सामंजस्य है जिसमें सकारात्मक इरादों की उपस्थिति से स्वयं को पूर्ण अनुभव करता है। यह अपने ही अंतर्मन के प्रति एक निश्छल ईमानदारी है जहाँ आत्मचिंतन ऐसे प्रकाश में बदल जाता है जो प्रत्येक विरोधाभास के भीतर छिपे अर्थ को उजागर करता है। इस आंतरिक स्थिरता में, सामंजस्यपूर्ण स्वभाव विकसित होता है, यह विचारों को उस सर्वव्यापी सार को समझने में सक्षम बनाता है जो अपनी अनेक अभिव्यक्तियों के माध्यम से अपने गुणों को प्रकट करता है। यह समझ ऐसी समृद्धि में रूपांतरित होती है जो स्वयं के प्रति और दूसरों के प्रति सद्भावना से जुड़ी होती है। ऐसी पूर्णता से युक्त होकर, व्यक्ति इस संसार को ब्रह्मांडीय संप्रभुता की ही अभिव्यक्ति के रूप में देखता है और उससे जुड़ाव महसूस करता है।

हले यारां हले यारां खुसिखबरी ॥

साथियों! मेरे सच्चे मित्र के बारे में मेरे पास साँझा करने के लिए एक अद्भुत समाचार है। यह क्षण उस परम आनंद की भावना का प्रतीक है जो तब उत्पन्न होती है जब कोई अपने भीतर के साथी, उस सर्वव्यापी चेतना की उपस्थिति को पहचानता है जो हम सभी को आपस में जोड़ती है।

बलि बलि जांउ हउ बलि बलि जांउ ॥

बार-बार, मैं स्वयं को अर्पित करता हूँ, बार-बार मैं समर्पित होता हूँ। यह अहं के आंतरिक समर्पण को दर्शाता है जिससे आत्मा सत्य और रूपांतरण को अपनाने की अनुमति देता है।

नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउ ॥१॥ रहाउ ॥

आपकी सेवा में रहना एक पुण्य कार्य है और आपके सार पर चिंतन करना एक उत्थानकारी अनुभव है। यह एकीकृत अस्तित्व की स्वीकृति का प्रतीक है, जिसे यहाँ 'आपका' कहकर संबोधित किया गया है जिसमें जीवन के प्रत्येक पहलू को महत्व दिया जाता है। (१)(विराम)

कुजा आमद कुजा रफती कुजा मे रवी ॥

मैं कहाँ से आया हूँ, मैं कहाँ जाता हूँ और मैं किस ओर बढ़ रहा हूँ। यह चिंतन हमारी अनिश्चितताओं पर प्रकाश डालता है और हमें अपने अस्तित्व के सच्चे अर्थ पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है।

द्वारिका नगरी रासि बुगोई ॥१॥

मुझे द्वारका के बारे में वह रहस्य बताओ, वह पौराणिक नगरी जिसे ज्ञानोदय का द्वार माना जाता है। यह जिज्ञासा द्वारका को चेतना की ऐसी अवस्था के रूप में दर्शाती है जो मन को एकत्व की वास्तविकता के प्रति खोल देती है। (१)

खूबु तेरी पगरी मीठे तेरे बोल ॥

पगड़ी तुम्हारी बहुत सुंदर है जो नेक इरादों की निशानी है, तेरे बोल बहुत मीठे हैं। यह दिखाता है कि जब विचार सचेत और सकारात्मक होते हैं तब उनसे प्रेरणा देने वाले मीठे शब्द ही निकलते हैं।

द्वारिका नगरी काहे के मगोल ॥२॥

द्वारका नगरी में रहते हुए, किसी और चीज़ को खोजने की क्या ज़रूरत है। इसका मतलब है कि द्वारका, यानी सच्ची चेतना को पा लेने से, स्वयं पर होने वाले संदेह और भटकने की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। (२)

चंदीं हजार आलम एकल खानां ॥

हज़ारों दुनियाएँ और अनगिनत रूप एक ही, अद्वितीय और संप्रभु स्थान में विद्यमान हैं। यह अनेकता में एकता, पूरे ब्रह्मांड पर एक ही सत्ता का राज और एक ही मूल सच्चाई को दर्शाता है।

हम चिनी पातिसाह सांवले बरनां ॥३॥

मैं उस संप्रभु को सांवले रंग वाले कृष्ण के समान देखता हूँ। यह तुलना, ज़ोर देती है कि हम उस सर्वव्यापी सार को, उसके अनेक रूपों में प्रकट होने वाले विभिन्न गुणों के माध्यम से, अनुभव कर सकते हैं। (३)

असपति गजपति नरह नरिंद ॥

घोड़ों के स्वामी, हाथियों के मालिक, ये सब इंसानों पर राज करते हैं। यह उन तमाम सांसारिक और मायावी शक्तियों को दिखाता है जिन्हें मन परम सत्ता के रूप में पूजता है।

नामे के स्वामी मीर मुकंद ॥४॥२॥३॥

नामदेव कहते हैं कि उनके सच्चे स्वामी तो वही हैं, जो उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान से रोशन करते हैं। यह उजागर करता है कि किसी पूजनीय हस्ती या किसी महान दर्शन का असली सार यही है कि वह ऐसा ज्ञान साँझा करें जो इंसान की चेतना को ऊँचा उठाए। (४)(२)(३)

तत्त्व: भक्त नामदेव हमें यह समझने के लिए प्रेरित करते हैं कि संप्रभुता का सबसे सच्चा रूप वह है, जो हमारी साँझा मानवता के प्रति हमारी चेतना को जागृत करता है। वह द्वारका को केवल एक भौतिक स्थान के रूप में नहीं बल्कि एक गहन आंतरिक अवस्था के रूप में चित्रित करते हैं, ऐसी

अवस्था जो इस सार को अपने भीतर समेटे हुए है और जो आत्म-संदेह की स्थिति में भी अडिग बनी रहती है। वह इस बात पर बल देते हैं कि किसी पूजनीय व्यक्तित्व और परिवर्तनकारी दर्शन का वास्तविक महत्व उनकी उस क्षमता में निहित है जिसके द्वारा वह ऐसा ज्ञान साँझा करते हैं जो आत्मा का उत्थान करता है और सार्वभौमिक एकता को विकसित करता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com